चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	29-10-25	3	3-5

दैनिक भास्कर

एचएयू में मधुमक्खियां और परागणकर्ता समूह की वार्षिक बैठक शुरू

मधुमक्खी कृषि के लिए प्राकृतिक आधार, फसल उत्पादन और जैव विविधता को भी करती हैं सुदृढ़

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद - एआईसीआरपी मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक का शुभारंभ आईसीएआर फसल विज्ञान के उप महानिदेशक डॉ. डीके यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बैठक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-नई दिल्ली एवं एचएयू के कीट विज्ञान विभाग ने संयुक्त रूप से आयोजित की। बैठक में देशभर के 26 केंद्रों से 40 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

डॉ. डीके यादव ने कहा कि मधुमक्खी एवं परागणकर्ता कीट कृषि के लिए प्राकृतिक आधार हैं, ये फसल उत्पादन व जैव विविधता को सुदृढ़ करते हैं। मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला हैं और उनके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल शहद उत्पादन होता है, बल्कि परपरागण के माध्यम से फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता में वृद्धि होती है। उन्होंने परागण सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए मधुमक्खी प्रजातियों का संरक्षण, रोग एवं कीट प्रबंधन, उन्नत पालन तकनीक विकसित करने तथा किसानों के प्रशिक्षण के साथ प्रचार-प्रसार पर जोर दिया। उन्होंने पॉलीहाउस व नेट हाउस में मधुमक्खियों व परागणकर्ता कीटों के उपयोग पर एक्सपेरिमेंट को बढ़ावा देने पर जोर दिया। आईसीएआर की एडीजी डॉ. पूनम जसरोटिया ने कहा कि मधुमक्खियां पारिस्थितिकीय स्थिरता, कृषि उत्पादकता की आधारभूत कड़ी हैं। कुलपति ने कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने, पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण है। उन्होंने वैज्ञानिकों से जलवायु के अनुरूप नवाचार करने, किसानों को प्रशिक्षण देने पर बल दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने विवि में मधुमक्खियों, प्रांगणकर्ताओं को लेकर किए जा रहे शोध कार्यों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि।

मधुमक्खी पालन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 किसान सम्मानित

बैठक में मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इनमें सुभाष चंद, अनिल सिंह सिंधु, संदीप जाटान, रमेश पुरी, धर्मपाल, सुरेन्द्र, रामपाल, दिनेश कुमार, प्रभात फोगाट तथा विशाल पचार शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	29-10-25		

कृषि उत्पादन बढ़ोतरी में मधुमक्खियों की अहम भूमिका : डीके यादव

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद-एआइसीआरपी मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक शुरू हुई। इसका शुभारंभ आइसीएआर (फसल विज्ञान) के उप महानिदेशक डा. डीके यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समूह की बैठक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-नई दिल्ली एवं हकृवि के कीट विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। बैठक में देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डा. डीके यादव • जागरण

डा. डीके यादव ने कहा कि मधुमक्खी एवं परागणकर्ता कीट कृषि के लिए प्राकृतिक आधार हैं, जो फसल उत्पादन और जैव विविधता दोनों को सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे टिकाऊ कृषि प्रणाली के लिए मधुमक्खियों की भूमिका को और अधिक व्यापक रूप से सामने लाएं। उन्होंने कहा कि मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला हैं और उनके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल शहद उत्पादन होता है बल्कि परपरागण के माध्यम से फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना ने देश में मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नई दिशा दी है। मधुमक्खियां न केवल शहद उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि वे कृषि क्षेत्र का भी अभिन्न अंग हैं, जो परागण के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती हैं।

उन्होंने पालीहाउस व नेट हाउस में मधुमक्खियों के अलावा अन्य परागणकर्ता कीटों के उपयोग पर एक्सपेरिमेंट को बढ़ावा देने पर जोर दिया। दो पुस्तकों का विमोचन भी हुआ।

10 किसान सम्मानित : बैठक में मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इन किसानों में सुभाष चंद, अनिल सिंह सिंधु, संदीप जाटान, रमेश पुरी, धर्मपाल, सुरेन्द्र, रामपाल, दिनेश कुमार, प्रभात फोगाट और विशाल पचार शामिल हैं।

किसानों की आय बढ़ाने में मधुमक्खी पालन महत्वपूर्ण

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में कई अनुसंधान उपलब्धियां प्राप्त की हैं और नई तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का कार्य निरंतर जारी है। उन्होंने वैज्ञानिकों से स्थानीय जलवायु के अनुरूप नवाचार करने और किसानों को प्रशिक्षण देने पर बल दिया। मधुमक्खियों और प्रांगणकर्ताओं का कृषि अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। विश्व की लगभग 75 प्रतिशत खाद्य फसलें परागण पर निर्भर हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	29-10-25	3	1-5

मंथन

हकृवि में मधुमक्खी और परागणकर्ता समूह की तीन दिवसीय वार्षिक बैठक शुरू, देशभर के 26 केंद्रों से आए 40 वैज्ञानिक और प्रतिभागी

मधुमक्खियां कृषि उपज बढ़ाने की आधारशिला, संरक्षण जरूरी

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। मधुमक्खियां कृषि उपज में बढ़ोतरी की आधारशिला हैं और इनका संरक्षण न केवल फसल उत्पादकता बल्कि जैव विविधता को भी सुदृढ़ करता है। यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) फसल विज्ञान के उप महानिदेशक डॉ. डीके यादव ने मंगलवार को कही।

वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना मधुमक्खी एवं परागणकर्ता की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। बैठक में देशभर के 26 केंद्रों से 40 वैज्ञानिक और प्रतिभागी शामिल होने आए हैं।

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि। स्रोत : विवि

आईसीएआर, नई दिल्ली और एचएयू के कीट विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. यादव ने कहा कि मधुमक्खियां और परागणकर्ता कृषि प्रणाली की प्राकृतिक नींव हैं, जो फसलों की गुणवत्ता और पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि करती हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से अपील की कि वे टिकाऊ कृषि प्रणाली में मधुमक्खियों की भूमिका को और व्यापक रूप से सामने लाएं। उन्होंने मधुमक्खी एवं परागण से संबंधित दो पुस्तकों का विमोचन भी किया।

आईसीएआर की एडीजी डॉ. पूनम जसरोटिया ने कहा कि मधुमक्खियां पारिस्थितिकीय स्थिरता और कृषि उत्पादकता की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। एआईसीआरपी परियोजना ने मधुमक्खी पालन को वैज्ञानिक दिशा देने के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया है।

बैठक के दौरान परियोजना समन्वयक डॉ. सचिन एस. सुरेश ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने एचएयू में चल रहे अनुसंधानों की जानकारी दी। मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सुभाष चंद, अनिल सिंह सिंधु, संदीप जाटान, रमेश पुरी, धर्मपाल, सुरेंद्र, रामपाल, दिनेश कुमार, प्रभात फोगाट और विशाल पचार को सम्मानित किया गया।

मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम

बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण का भी एक सशक्त साधन है। उन्होंने बताया कि एचएयू ने इस क्षेत्र में कई शोध उपलब्धियां हासिल की हैं और नई तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का कार्य निरंतर जारी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29-10-25	12	1-4

कृषि उत्पादन बढ़ोतरी में मधुमक्खियों की खास भूमिका

- हकृवि में 'मधुमक्खियां और परागणकर्ता' समूह की वार्षिक बैठक का शुभारंभ
- देशभर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी ले रहे भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद- एआईसीआरपी मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक का शुभारंभ आईसीएआर (फसल विज्ञान) के उप महानिदेशक डॉ. डी.के. यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समूह की बैठक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-नई दिल्ली एवं हकृवि के कीट विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। बैठक में देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। डॉ. डी.के. यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि मधुमक्खी एवं परागणकर्ता कीट कृषि के लिए प्राकृतिक आधार हैं, जो फसल उत्पादन और जैव विविधता दोनों को सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे टिकाऊ कृषि प्रणाली के लिए मधुमक्खियों की भूमिका को और अधिक व्यापक रूप से सामने लाएं।

मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला

उन्होंने कहा कि मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला हैं और उनके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल शहद उत्पादन होता है बल्कि परपरागण के माध्यम से फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना ने देश में मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नई दिशा दी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	29.10.25	2	7-8

मधुमक्खियां कृषि उत्पादन बढ़ौतरी में अहम भूमिका निभाती हैं: डॉ. यादव

मधुमक्खियों और परागणकर्ताओं का कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदानः प्रो. काम्बोज

-देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी ले रहे भाग

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि।

हिसार, 28 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद- ए.आई.सी.आर.पी. मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक का शुभारंभ आईसीएआर (फसल विज्ञान) के उप महानिदेशक डॉ. डी.के. यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बैठक में देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

डॉ. डी.के. यादव ने अपने सम्बोधन में परागणकर्ताओं के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव एवं आधुनिक मधुमक्खी पालन तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में वैज्ञानिकों से स्थानीय जलवायु के अनुरूप नवाचार करने और किसानों को प्रशिक्षण देने पर बल देते हुए कहा कि मधुमक्खियों और प्रांगणकर्ताओं का कृषि अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। आई.सी.ए.आर. की ए.डी.जी. डॉ. पूनम जसरोटिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया कि परियोजना ने देश में मधुमक्खी पालन को वैज्ञानिक दिशा देने के साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया है।

बैठक में ए.आई.सी.आर.पी. के परियोजना समन्वयक डॉ. सचिन एस सुरोश ने परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने शोध कार्यों के बारे में जानकारी दी। बैठक में मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इन किसानों में सुभाष चंद, अनिल सिंह सिंधु, संदीप जाटान, रमेश पुरी, धर्मपाल, सुरेन्द्र, रामपाल, दिनेश कुमार, प्रभात फोगाट तथा विशाल पचार शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	29-10-25	5	6-8

मधुमक्खियां कृषि उत्पादन बढ़ोतरी में अहम् भूमिका निभाती हैं : डॉ. यादव

हिसार, 28 अक्तूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद- एआईसीआरपी मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक का शुभारंभ आईसीएआर (फसल विज्ञान) के उप महानिदेशक डॉ. डी.के. यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समूह की बैठक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-नई दिल्ली एवं हकृवि के कीट विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। बैठक में देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। डॉ. डी.के. यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि मधुमक्खी एवं परागणकर्ता कीट कृषि के लिए प्राकृतिक आधार हैं, जो फसल उत्पादन और जैव विविधता दोनों को सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे टिकाऊ कृषि प्रणाली के लिए मधुमक्खियों की भूमिका को और अधिक व्यापक रूप से सामने लाएं। उन्होंने कहा कि मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला हैं और उनके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल शहद उत्पादन होता है बल्कि परपरागण के माध्यम से फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना ने देश में मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नई दिशा दी है। मधुमक्खियां न केवल शहद उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि वे कृषि क्षेत्र का भी अभिन्न अंग हैं, जो परागण के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में कई अनुसंधान उपलब्धियां प्राप्त की हैं और नई तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का कार्य निरंतर जारी है। बैठक में एआईसीआरपी के परियोजना समन्वयक डॉ. सचिन एस सुरोश ने परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें देश के विभिन्न केन्द्रों पर चल रहे अनुसंधान, तकनीकी उपलब्धियों और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया और विभागीय गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। मंच का संचालन डॉ. रीना चौहान ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	28.10.2025		

मधुमक्खियां कृषि उत्पादन में अहम् भूमिका निभाती हैं : डॉ. डीके

हकृवि में 'मधुमक्खियां और परागणकर्ता' समूह की वार्षिक बैठक का शुभारंभ, देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी ले रहे भाग

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद- एआईसीआरपी मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना की वार्षिक समूह की तीन दिवसीय बैठक का शुभारंभ आईसीएआर (फसल विज्ञान) के उप महानिदेशक डॉ. डी.के. यादव ने बतौर मुख्य अतिथि किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समूह की बैठक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-नई दिल्ली एवं हकृवि के कीट विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। बैठक में देश भर के 26 केन्द्रों से 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

डॉ. डी.के. यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि मधुमक्खी एवं परागणकर्ता कीट कृषि के लिए प्राकृतिक आधार हैं, जो फसल उत्पादन और जैव विविधता दोनों को सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे टिकाऊ कृषि प्रणाली के लिए मधुमक्खियों की भूमिका को और अधिक व्यापक रूप से सामने लाएं। उन्होंने कहा कि मधुमक्खियां कृषि उत्पादन की आधारशिला है और उनके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल शहद उत्पादन होता है बल्कि परपरागण के माध्यम से फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय मधुमक्खी एवं परागणकर्ता परियोजना ने देश में मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नई दिशा दी है। मधुमक्खियां न केवल शहद उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि वे कृषि क्षेत्र का भी अभिन्न अंग है, जो परागण के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती है। उन्होंने परागणकर्ताओं के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव एवं आधुनिक मधुमक्खी पालन तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने परागण सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए मधुमक्खी प्रजातियों का संरक्षण, रोग एवं कीट प्रबंधन, उन्नत पालन तकनीक विकसित करने तथा किसानों के प्रशिक्षण के साथ-साथ प्रचार-प्रसार पर भी जोर दिया। उन्होंने पॉलीहाउस व नेट हाउस में मधुमक्खियों के अलावा अन्य परागणकर्ता कीटों के उपयोग पर एक्सपेरिमेंट को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम में मधुमक्खी एवं परागण से संबंधित दो पुस्तकों का विमोचन किया।

बैठक में एआईसीआरपी के परियोजना समन्वयक डॉ. सचिन एस सुरेश ने परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें देश के विभिन्न केन्द्रों पर चल रहे अनुसंधान, तकनीकी उपलब्धियों और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने विश्वविद्यालय में मधुमक्खियों और परागणकर्ताओं को लेकर किए जा रहे शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि।

मधुमक्खियों और परागणकर्ताओं का कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान : प्रो. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन किसानों की आय बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में कई अनुसंधान उपलब्धियां प्राप्त की है और नई तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का कार्य निरंतर जारी है। उन्होंने वैज्ञानिकों से स्थानीय जलवायु के अनुरूप व्यवहार करने और किसानों को प्रशिक्षण देने पर बल दिया। मधुमक्खियों और परागणकर्ताओं का कृषि अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। विश्व की लगभग 75 प्रतिशत खाद्य फसलें परागण पर निर्भर है। परागणकर्ताओं की सुरक्षा सीधे तौर पर मानव भोजन सुरक्षा से जुड़ी हुई है। मधुमक्खियां कृषि उपज में बढ़ोतरी करने के साथ-साथ जैव विविधता का संरक्षण भी करती है। मधुमक्खी पालन से शहद, मोम, पराग, रॉयल जेली और अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। बैठक में मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इन किसानों में सुभाष पट, अनिल सिंह सिद्धु, संदीप जटान, रमेश पुरी, धर्मपाल, सुरेन्द्र, रामपाल, दिनेश कुमार, प्रभात कोमार तथा विशाल पवार शामिल है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया और विभागीय गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। मंच का संचालन डॉ. टीना पौलन ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।